INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

भोजपुरी भाषा के उत्थान में डिजिटल मीडिया की भूमिका

(Role of Digital Media in the Upliftment of Bhojpuri Language)

स्वाती गुप्ता
सहायक प्रोफेसर,
जनसंचार विभाग,
रामा विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तरप्रदेश, भारत)

कविता वर्मा
टीचिंग एसोसिएट,
जनसंचार विभाग,
रामा विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तरप्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/12.2023-93831677/IRJHIS2312014

शोध सारांश –

भारत देश एक ऐसा देश है, जहां विभिन्न भाषाएं बोली जाती है। प्रत्येक भाषाकीसंचार की दृष्टि से अपनी महत्ता होती है। हर क्षेत्र के लोग अपनी भाषा में संचार करना पसंद करते हैं। भोजपुरी भाषा की गिनती उभरती हुई लोकप्रिय भाषाओं में की जाी है। वर्तमान समय में भोजपुरी भाषा में अनेक पत्र-पत्रिकाएं भी प्रकाशित किए जा रहें हैं। विश्व भोजपुरी सम्मेलन, भारत ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर भी भोजपुरी भाषा प्रचार-प्रसार में लगा हुआ है। अबतक उत्तरप्रदेश के देवरिया जिले, दिल्ली, मुंबई, कोलकभोजपुता, मारीशस, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड और अमेरिका में इसकी शाखाएं मौजूद हैं।इस बात में कोई संदेह नहीं है कि किसी भी भाषा के लोकप्रियकरण में डिजिटल मीडिया एक अहम भूमिका निभाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में भोजपुरी भाषा के उत्थान में डिजिटल मीडियाकी भूमिका का अवलोकन किया गया है।

महत्वपूर्ण शब्द – *भोजपुरी भाषा,डिजिटल मीडिया, लोकप्रियता, संचार*

प्रस्तावना-

किसी भी समाज के निर्माण में भाषा की अलग महत्ता होती है। इतिहास के कालखंडों को पलट कर देखा जाए तो भाषा की उपयोगिता को समझा जा सकता है। प्राचीन समय में भाषा की महत्ता सिर्फ कथा, कहानी, मुहावरों, भजन, कवितातक सीमित थी, किन्तु जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास होता गया वैसे-वैसे भाषा का भी विकास होने लगा। अब मौखिक अभिव्यक्ति के अलावा तामपत्रों, शिलाओं तथा पत्तों पर इतिहास को सँजोने का कार्य किया जाने लगा। इतिहास में स्वर्ण सूत्र नामक पुस्तक इस तथ्य का प्रमाण है।व्यक्ति के आधुनिक होने के साथ-साथ कई चीजों का विकास होने लगा। मुद्रण मशीन भी उसी विकास का उदाहरण बनी। मुद्रण मशीन के आने से भाषा का विकास तेजी से होने लगा। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विभिन्न भाषाओं में समाचार पत्र भी निकाले गए। इसका मुख्य लक्ष्य देश के कोने-कोने में स्वतंत्रता के प्रति जोश जागृत करना था। मुद्रण मशीन के उपरांत बीसवीं सदीमें रेडियो औरटी.वी. का आगमन हुआ। जिसके कारण हिन्दी के साथ-साथ कई अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का प्रसार हुआ। बीसवीं सदी के आखिर में इंटरनेट के आगमन से तकनीकी के क्षेत्र में

क्रांति आ गई। यह वह समय था जब कोई व्यक्ति, देश और संस्था किसी भी एक जगह तक सीमित न रहकर दुनिया के हर कोने तक पहुँच सकता था। ऐसे में कोई भी व्यक्ति, संस्था या समाज अपनी बात को बेझिझक किसी से भी कह सकता था। ऐसे दौर में क्षेत्रीय भाषा का विस्तार तेजी से होने लगा। भोजपुरी भाषा भी उभरकर सामने आने लगी।इस बात में कोई संदेह नहीं है कि किसी के प्रस्तार में मीडिया के अहम भूमिका निभाता है। डिजिटल मीडिया के आने से यह काम और भी आसान हो गया है। वर्तमान समय में लोग सोशल नेटवर्किंग साइट के जरिए, ब्लॉग, वलोग के जरिए अपनी बात जन-जन तक पहुंचा सकते हैं। वर्तमान समय में खबर भोजपुरी, भोजपुरी डॉट इन आदि वेबसाइट भोजपुरी भाषा की लोकप्रियता बढ़ाने का कार्य कर रहें हैं।

साहित्य समीक्षा-

प्रस्तुत शोध को करने के लिए भोजपुरी भाषा और डिजिटल मीडिया से जुड़े विभिन्न शोध पत्रों, किताबों, लेख-आलेख, प्रतिवेदन, वेबसाइट और शोध प्रबंधों का अध्ययन किया गया है।

भोजपुरी भाषा का परिचय –

किसी भी सभ्यता के विकास में भाषा की एक अहम भूमिका होती है। राष्ट्रीय भाषाओं के अलावा मातृभाषा कीमहत्ता को भी स्वीकारा गया है। राष्ट्रनिर्माण में मातृभाषा की उपयोगिता को समझते हुए 29 फरवरी को मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि भारत में कई भाषाएं बोली जाती हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी महत्ता होती है।हिन्दी की छोटी बहन के रूप में प्रचलित भोजपुरी भाषा की उत्पत्ति बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश राज्य से हुई है। भोजपुरी भाषा के कुछ शब्द संस्कृत एवं हिन्दी से मिले हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि भोजपुरी भाषा के कुछ शब्द इसने उर्दू भाषा से भी लिए गए हैं।इस भाषा की सबसे खास बात यह है कि यह भाषा सिर्फ भारत देश तक सीमित न होकर बल्कि विश्व के कई महाद्वीपों में भी लोकप्रिय है। भारत के अलावा नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, फिजी, मॉरिशस, अमेरिका, त्रिनिनाद और टोबैगो तथा सुरीनाम आदि देशो में भोजपुरी भाषा का बोलबाला है। मारिशस के हिन्दी विद्वान सोमदत्त बखोरी ने 'एक मारिशस की हिन्दी यात्रा' नामक पुस्तक में इस बात का जिक्र किया है कि " भोजपुरी केवल घर की भाषा नहीं थी, ये सारे गाँव की भाषा थी। भोजपुरी के दम पर लोग हिन्दी समझ लेते थे और हिन्दी सीखना चाहते थे।" भोजपुरी भाषा ने भारत देश में नहीं अपितु विदेश में लोकप्रियता हासिल की। बढ़ती हुई लोकप्रियता के कारण जून 2011 में भोजपुरी भाषा को मारिशस में संवैधानिक भाषा की भी मान्यता दी गई है। भोजपुरी भाषा की गिनती उन्हीं लोकप्रिय भाषाओं में की जाती है।भोजपुरी शब्द का भाषाके रूप में सर्वप्रथम उल्लेख पटना के 'गजेटियर्स रिवीजन स्कीम' के विशेष अफसर पी.सी. राय चौधरी ने किया। उनके अनुसार भोजपुरी भाषा का उद्भव बिहार में बक्सर के निकट स्थित 'भोजपुर' नामक स्थान से हुआ है। भोजपुर नाम का यह गाँव बिहार के बक्सर सब डिवीज़न में डुमराँव से दो मील की दूरी पर स्थित है जोकि बिहार की राजधानी पटना से सौ मील की दूरी पर है। प्राचीन समय में भोजपुर मालवा से आए शक्तिशाली राजपूतों की राजधानी था।ग्रयर्सन ने अपने भाषा सर्वेक्षण में इस तथ्य को उजागर किया है कि भोजपुरी भाषा की सीमा काफी दूर तक फैली है। इसका विस्तार मुजफ्फरपुर से लेकर हजारीबाग, जयपुर, छत्तीसगढ़, बनारस, अवध, रांची और उड़ीसा तक फैला हुआ है। भोजपुरी भाषा सिर्फ भारत में ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर एक लोकप्रिय भाषा है। इसके वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय होनेका भी अपना इतिहास है।

भोजपुरी भाषा का वैश्विक इतिहास-

भोजपुरी भाषा की मॉरीशस की पृष्ठभूमिके बारे में यह बात कही जाती है कि सन् 1834-1924 ईस्वी में भारत से लगभग साढ़े

चार लोग गिरमिटिया मजदूर बनाकर मॉरीशस ले जाए गए। ऐसा भी कहा जाता है कि भोजपुरी भाषा हिन्दी भाषा के बादसर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। जोकि भोजपुरी भाषा की लोक-संस्कृति मजबूत होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। यह लोक संस्कृति वैश्विक स्तर पर भी काफी लोकप्रिय है। यह लोक संस्कृति विदेशों में मॉरीशस,त्रिनिदाद, युगांडा, फीजी आदि देशों में भी फैल चुकी है।वर्तमान समय में भोजपुरी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग की जा रही है।मीडिया भी इसमें बराबरी की भूमिका निभा रहा है। डिजिटल मीडिया के जरिए लोग भोजपुरी भाषा का विस्तार कर रहें हैं।

डिजिटल मीडिया पर भोजपुरी भाषा की लोकप्रियता -

वर्तमान समय में की लोग भोजपुरी भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए डिजिटल मीडिया का सहारा ले रहें हैं। मशहूर सोशल मीडिया इन्फ़्लुएनसर कीली पॉल ने भोजपुरी गाने पर अभिनय किया। इसके अलावा यूथ की आवाज चैनल पर भोजपूरी भाषा को लोकप्रिय बनाने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है।

मितवा टीवी-

कोविड काल में भारत का पहला डिजिटल जंक्शन मितवा टीवी लांच किया गया। मितवा टीवी का उद्देश्य भोजपुरी मनोरंजन जगत को विश्व पटल पर लाना है।

अंजोरिया वेबसाइट-

भोजपुरी भाषा के विस्तार के अंजोरिया नामक वेबसाइट भी शुरू की गई। वर्तमान समय में इस वेबसाइट को शुरूहुए लगभग 20 वर्ष हो गए हैं। इस वेबसाइट का मुख्य उद्देश्य आम-जन में भोजपुरी भाषा को लोकप्रिय बनाना है। इस वेबसाइट पर देश-दुनिया कि खबरें भोजपुरी भाषा में डी जाती हैं। डिजिटल मीडिया का यह प्लेटफॉर्म न सिर्फ भोजपुरी पाठकों को एक अच्छा अवसर प्रदान करता है अपितु भोजपुरी भाषा के जानकार अर्थात भोजपुरी भाषा लिखने वालों को भी एक बेहतर अवसर प्रदान करता है।

खबर भोजपुरी (आपन भाषा आपन खबर)

शोध उद्देश्य –प्रस्तुत शोधपत्र के शोध उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- भोजपुरी भाषा की ऐतिहासिक महत्ता का अवलोकन करना है।
- भोजपुरी भाषा के उत्थान में डिजिटल मीडिया की भूमिका का अवलोकन करना है।

शोध प्रश्न –प्रस्तुत शोध को करते समय निम्नलिखित प्रश्न उजागर होते हैं।

- भोजपुरी भाषा की ऐतिहासिक महत्ता क्या है?
- भोजपुरी भाषा के उत्थान में डिजिटल मीडिया की क्या भूमिका है?

शोध प्रविधि-

प्रस्तुत शोध को सही समय में पूर्ण करने के लिए सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। यह सर्वेक्षण उत्तरप्रदेश के गोरखपुर, देवरिया, बनारस, फैजाबाद और गाजीपुर जिले के शहरी क्षेत्रों में यह शोध किया गया है। इस सर्वेक्षण के लिए प्रत्येक क्षेत्र से 100 सैम्प्ल्स लिए गए हैं। कुल उत्तरदाताओं की संख्या500 हैं। जिनकी आयु 18 साल से 40 साल के मध्य है।

शोध परिणाम / विश्लेषण-

प्रस्तुत शोध पत्र से यह बात प्रमाणित होती है कि भोजपुरी भाषा एक लोकप्रि भाषा होने के साथ-साथ सांस्कृतिक रूप में भी धनी

है। यह भाषा न सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर अपितु वैश्विक स्तर पर एक लोकप्रिय भाषा के रूप में जानी जाती है। विश्व के अनेक देशों और महाद्वीपों में इस भाषा को पहचान मिली हुई है। इसके तथ्य के पीछे सबसे बड़ा कारण है भारत देश के भोजपुरी भाषा बोलने वाले बहुत बड़े समुदाय का दुनिया के की हिस्सों में जाकर बस जाना। प्राचीन समय में भारत देश से की लोगों को बहलाफुसलाकर विदेश में गिरमिटिया मजदूर बनाकर ले जाया गया। उन मजदूरों के साथ भोजपुरी भाषा भी विदेशों में बस गई। इसके अलावाप्रस्तुत शोध पत्र से यह भी प्रमाणित होता है कि डिजिटल मीडिया पर की तरीकों से भोजपुरी भाषा को लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है।भोजपुरी भाषा को जनमानस के मध्य लोकप्रिय बनाने के लिए जहां एक ओर सोशल मीडिया इन्फ़्लुएंसर आगे आ रहें तो वहीं दूसरी ओर भोजपुरीन्यूज और अन्य चैनल्स के माध्यम से भोजपुरी भाषा को लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है।सर्वेक्षण से कुछ तथ्य उभरकर सामने आते हैं जो इस प्रकार हैं-

- क्या आप भोजपुरी भाषा को लोकप्रिय भाषा मानते हैं?

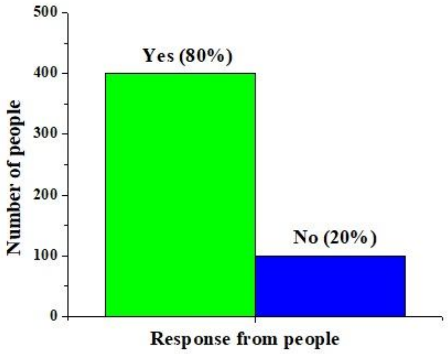

- आपके अनुसार मीडिया के किस प्लेटफॉर्म के जरिए भोजपुरी भाषा के संवर्धन का कार्य सबसे अधिक हो रहा है?

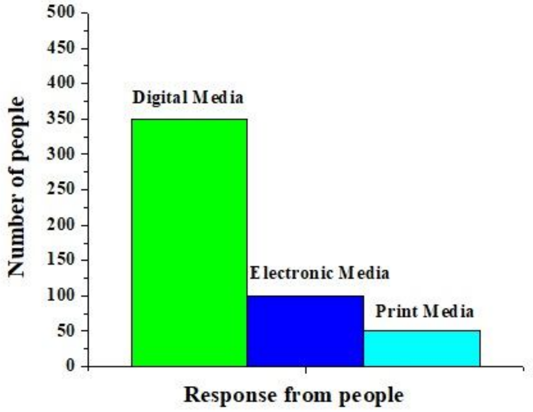

क्या आप डिजिटल मीडिया पर प्रचलित भोजपुरी चैनल्स या वेबसाइट से परिचित हैं? किन्हीं दो के नाम बताएं।

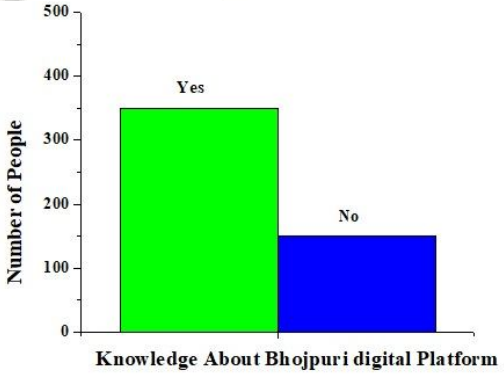

आपके अनुसार भोजपुरी भाषा को लोकप्रिय बनाने में डिजिटल मीडिया कहाँ असफल रहा है/ या क्या कमियाँ रहीं है?

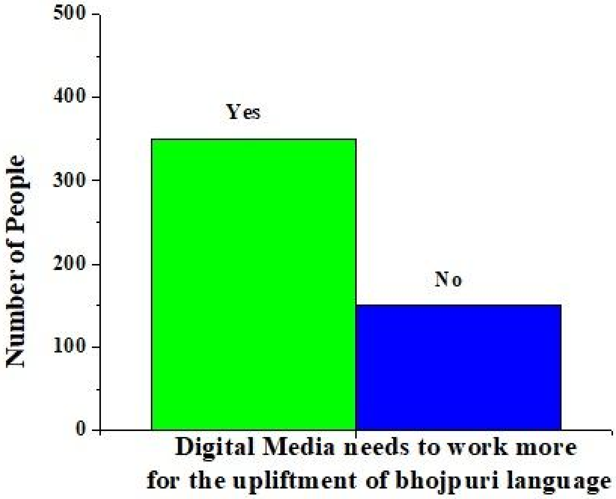

डाटा विश्लेषण-

- 80 प्रतिशत लोगों का मानना है कि भोजपुरी भाषा एक लोकप्रिय भाषा है।जबकि 20 % लोग यह मानते हैं कि भोजपुरी भाषा लोकप्रिय भाषा नहीं है, अर्थात सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों से यह पता चलता है कि भोजपुरी भाषा एक लोकप्रिय भाषा है
- 76 प्रतिशत लोगों ने मीडिया के अन्य माध्यमों की अपेक्षा डिजिटल मीडिया को भोजपुरी भाषा के उत्थान के लिए ज्यादा जिम्मेदार बताया है। जबकि 24% लोग इस बात से सहमत नहीं है। अर्थात शोध से प्राप्त आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि डिजिटल मीडिया भोजपुरी भाषा के उत्थान के लिए कार्य कर रही है।
- 75 प्रतिशत लोगों को डिजिटल मीडिया के भोजपुरी प्लेटफॉर्म्स के बारे में जानकारी है। जिनमें प्रमुखमीतवा टी. वी. और खबर भोजपुरी हैं।
- 74प्रतिशत लोगों का यह कहना है कि डिजिटल मीडिया को भोजपुरी भाषा के उत्थान के और कार्य करने की आवश्यकता है। डिजिटल मीडिया पर अभी अन्य भाषाओं का अधिक बोलबाला है। डिजिटल मीडिया पर भोजपुरी भाषा को अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए अधिक संख्या में भोजपुरी भाषी लोगों को आगे आना होगा।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि भोजपुरी भाषा एक लोकप्रि भाषा है। विभिन्न मीडिया प्लेटफॉर्म पर भोजपुरी भाषा के उत्थान के लिए कार्य किया जा रहा है, लेकिन संचार के अन्य माध्यमों की अपेक्षा डिजिटल मीडिया पर यह कार्य अधिक किया जा रहा है। लेकिन यह कार्य अभी पूरी तरह से कारगर साबित नहीं हो पाया है। यह पूरी तरह से तभीकारगर साबित होगा जब अधिक मात्रा में भोजपुरी भाषा का ज्ञान रखने वाले लोग डिजिटल मीडिया पर आगे आएंगें।

शोध सीमा-

प्रत्येक शोध की सीमा होती है। यह शोध देवरिया, गोरखपुर, गाजीपुर, बनारस और फैजाबाद के शहरी इलाकों तक सीमित है। इस शोध कार्य के लिए 18 वर्ष से 40 वर्ष तक आयु के उत्तरदाता को चुना गया है।

संदर्भ -

1. बुद्ध सरिता (2003), मॉरीशस की भोजपुरी परम्पराएं, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली: प्रथम संस्करण
2. यादव, वीरेंद्र (2010), लोकसंस्कृति के आइने में भोजपुरी भाषा चिंतन के विविध आयाम, ओमेगा पब्लिकेशन: दिल्ली
3. सिन्हा ज्योति (2017), भोजपुरी भाषा के विकास में मीडिया की भूमिका, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एण्ड एनोवेटिव रिसर्च.
4. भोजपुरी मीडिया, इकाई 15, ignou.
5. https://www.bhaskarhindi.com/education/news/digital-media-has-made-indian-languages-a-global-language-prof-dwivedi-443454
6. https://tejaskhabar.com/indias-first-bhojpuri-digital-junction-mitwa-tv-launched/
7. https://www.anjoria.com/